सारांश एवं निष्कर्ष
सारांश एवं निष्कर्ष

पृथ्वी की सतह पर बसियां की विकित्र प्रकार की इकाइयों मिलती हैं जो कार्य एवं जनसंख्या की दृष्टि से परस्पर भिन्न हैं। बसियां की इन विविध इकाइयों में कुछ ऐसी भी बसियां हैं जिनका अस्तित्व सच्चे के लिए कम अपनु दूसरों के लिए अधिक होता है। इन स्थायी बसियां में निरंतर कार्य एवं सेवाओं की वृद्धि होती रहती है। क्रमिक सेवाओं की वृद्धि से ये बसियां एक सेवा केन्द्र का रूप धारण करती हैं।

एक स्थायी सेवा केन्द्र बसियां के विकास की परम्परा की दृष्टि से विकास नामक का निर्माण करता है साथ ही सेवाओं के क्रमिक विकास द्वारा उस क्षेत्र को नगरीकरण की ओर ले जाता है। सामान्य रूप से ये सेवा केन्द्र एक व्यापक रूप से जहाँ लोग अपनी दैनिक आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु वस्तुओं को बेचने आथवा खरीदने के लिए आते हैं। ये केन्द्र सदैव अपनी सेवाओं द्वारा समाजीक एवं आरंभिक आवश्यकताओं की आपूर्ति करते हैं।

ग्रामीण सेवा केन्द्र जो नगर–ग्राम्य टन्न के सबसे निचले स्तर पर कार्य करते हैं। यह सेवा केन्द्र मुख्यतः ग्रामीण हाटों, बाजारों और लघु क्षेत्रों के रूप में पाये जाते हैं जहाँ ग्रामीण निवासी अपनी चुकियाँ-जुलुसार वस्तुओं का क्रय–विक्रय करते हैं। जहाँ वे इनकी सेवाओं की प्राप्ति हेतु गमनागमन करते हैं। विकास की प्रक्रिया में शामिल विभिन्न स्तर के इन सेवा केंद्रों को नियोजकों ने योजनाओं के माध्यम से विकसित करना
प्रारंभ कर दिया है ताकि ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित किया जा सके। उत्कृष्ट भौगोलिक वाले छोटे अथवा बड़े नगर इसी ग्रामीण सेवा केंद्रों की देन है। अतः समन्वित ग्रामीण विकास सेवा केंद्रों के क्रम विकास एवं असिटेंट पर निर्माण करता है।

सब प्रथम सेवा केंद्र अवधारणा सन् 1826 में वाणिज्यन के विलग प्रदेश की संकल्पना से हुई है। यह संकल्पना वर्तमान परिवेश में तर्क संगत नहीं है जो आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों एवं अनुमानित परीक्षणों से मेल नहीं खाती फिर भी उन्होंने एक छोटी सी विगारी दी जो बाद में क्रिस्टालर, लॉश, कॉल्व एवं गालिन तथा जेफरसन के बुकिंग तूर्ण कार्यों के रूप में प्रभावित हुई। सेवा केंद्रों के सन्दर्भ में क्रिस्टालर एवं लॉश का केंद्र रूपेंद्र सिद्धान्त विशेष महत्व रखता है पेर्सिक्स का विकास धूप सिद्धान्त इसी कड़ी के अन्तर्गत आता है क्योंकि बाद के विद्वानों ने भी इन्हीं सिद्धांतों को आधार मानते हुए अलग-अलग क्षेत्रों का चयन करके सेवा केंद्रों के अभिनिर्धारण का प्रयास किया है।

सेवा केंद्रों के सन्दर्भ में विदेशी भूगोल-विद्वानों की तरह भारतीय भूगोल-विद्वानों का योगदान सराहनीय है। भारतीय भूगोल-विद्वानों में आरोपी 0 मिथ्र, आरोपी 0 सिंह, एलोके सेन, आरोएल सिंह, आरोएल धिवीदी, एचओएन मिथ्र, एफबी मुखर्जी, जीओके मिथ्र, एसओके दीक्षित, वीओके तिवारी, बीएन मिथ्र, बीपी मिथ्र, जगदीश सिंह, आरोसी तिवारी, आरोबी मण्डल, केओनसिंह एवं एसबी सिंह का नाम विशेष
उल्लेखनीय है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अनेक वैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, भूगोल-वैज्ञानिकों तथा सरकारी संस्थाओं द्वारा समन्वित विकास में सहायक सेवा केंद्रों से समन्वित अध्ययन, नीति निर्धारण एवं उनके क्रियान्वयन का भरसक प्रयास किया गया।

वर्तमान परिवेश में अनेक नियोजकों एवं शोधार्थियों द्वारा सेवा केंद्रों की प्रकृति, विकास तदनुसार समस्याओं सेवा केंद्रों में नवाचारों के प्रयोग ग्रामीण विकास नियोजन एवं ग्रामीण अर्थ तन्त्र के विकास में सेवा केंद्रों की भूमिका पर गहन अध्ययन तेजी के साथ हो रहा है। बहराइच

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत ग्रामीण आंचल के सेवा केंद्रों के स्थानिक एवं कार्यालय संगठन का विशेषज्ञतात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि जनपद बहराइच में ग्रामीण सेवा केंद्रों का विकास समीपस्थ विकसित जनपदों के सापेक्ष में कम हुआ है बिह भी क्रमिक विकास के द्वारा इन सेवा केंद्रों का समन्वित विकास आवश्यक है। इससे इन केंद्रों को नगरीकरण और अधूरोक्तिकरण की ओर ले जाने में सहायता मिलेगी।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र गंगा के ऊपरी मैदानी भाग में स्थित है।

जनपद का अक्षांशीय विस्तार 27° 04’ उत्तर से 28° 24’ उत्तर एवं देशांतरीय विस्तार 81° 03’ से 82° 13’ पूर्व के मध्य स्थित है। जनपद की पूर्व से पश्चिम लम्बाई 135 किमी0 एवं उत्तर से दक्षिण 50 किमी0 है।
जनपद का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 5020 वर्ग किमी है। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र को प्रशासनिक दृष्टिकोण से 4 तहसीलों क्रमशः बहराइच, नानपारा, महसी एवं कैसरगंज आदि में विभाजित किया गया है। जनपद मुख्यालय पर एक नगरपालिका अवस्थित है। यहाँ का जनपद मुख्यालय बहराइच में है। जनपद में 14 विकासखण्ड एवं 136 न्याय पंचायत हैं। यहाँ राजस्व गाँवों की संख्या 1370 हैं।

अध्ययन क्षेत्र में कॉप मिटरी का निषेध मिलता है जिसमें बालु, सिल्ट एवं चीवक की प्रधानता है। यहाँ जलाभ का जमाव वागर एवं खादर के रूप में मिलता है। यहाँ की प्रमुख नदी घाघरा है जो अपनी सहायक नदी सरयू आदि के साथ प्रवाहित होती हुई निर्माण कॉप निकेल द्वारा अति उँची प्रदेश का निर्माण करती है। सम्पूर्ण क्षेत्र मैदानी भूभाग में स्थित होने के कारण समतल है। यहाँ ढाल प्रवणता अधिक है। घाघरा नदी के प्रवाह ने पश्चिम एवं दक्षिण भाग को विभाजन कर दिया है। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र मानसूनी जलवायु के अन्तर्गत आता है। यहाँ समशीतोष्ण जलवायु मिलती है। श्रीमा, वर्षाए एवं शीत प्रमुख ओरतुएं हैं। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में ग्रीष्म ओरतु मार्च से प्रारंभ होकर मध्य जून तक रहता है। यहाँ वर्ष ते सबसे गर्म मई महीने में उच्चतम तापमान 40.2 सेग्रेंट अंकित किया जाता है। इस क्षेत्र के मई एवं जून के महीने में धूल भरी आधियां चलती हैं। वर्षा ओरतु का प्रारंभ मध्य जून से हो जाता है। बगाल की खाड़ी का मानसून अध्ययन क्षेत्र को प्रभावित करता है। यहाँ जुलाई एवं अगस्त मुख्य
वर्षा के महीने हैं तथा अगस्त माह में सापेक्षिक आर्द्रता 80% के आस-पास रहती है। जनपद में शीत ऋतु का प्रारंभ नवम्बर माह से हो जाता है। जनवरी यहाँ का सबसे सर्द महीना है जिसका न्यूनतम तापमान 8.6°C रहता है। प्रायः शीत काल में कुछ वर्षा हो जाती है जो कृषि के लिए वरदान साबित होती है।

मिट्टी एक प्राकृतिक संसाधन है जो कृषि उत्पादन एवं अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है। अध्ययन क्षेत्र में जलोद विद्युत का जमाव मिलता है। जनपद बहराइच ऊपरी गंगा के मैदान में स्थित है। यहाँ की मिट्टी जलोद है जो लगभग सम्पूर्ण क्षेत्र पर विस्तृत है। यह मिट्टी अपनी उत्पादकता के कारण संतुलित कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। दोमट विद्युत चित्तौर, पयागपुर, विशेषगंज एवं हुजूरपुर के विकासखंडों के अलावा जनपद में यज्ञतरंग देखने को मिलती है।

बलुई दोमट मिट्टी का निर्माण बालू एवं चीका के समिश्रण से हुआ है। इसका रंग धूरा होता है इस मिट्टी में 40%-60% बालू के कण मिलते हैं। यह मिट्टी इस जनपद के 20% भू-भाग पर मिलती है। जनपद के नवाबगंज, बलहाएवं रिसिया आदि विकास खंडों में विशेष दरस्तव्ध है।

चिकनी दोमट मिट्टी यह मिट्टी जनपद के 50.4% भू-भाग पर पायी जाती है। यह मिट्टी जनपद के उत्तरी, पश्चिमी एवं दक्षिणी भागों में सर्वाधिक देखने को मिलती है। जनपद के मिट्टीपुरवा, बलहाएवं शिवपुर,
महाराष्ट्र, तंजयपुर, फक्शरपुर, कैसरगंज एवं जर्राल विकास खंडों में ज्यादा देखने को मिलती है।

जनपद में वनों का विस्तार कृषि अन्योग्य क्षेत्र तथा नदियों एवं नालों के किनारे यज्ञ-तत्त्र मिलता है। जनपद में से अधिक वनों का विस्तार नानपारा एवं बहराइच तहसील में सर्वाधिक मिलता है। अध्ययन क्षेत्र में साल, शीशाम, खेंर, सेमर, बरगद, बेल, जिजिना, पेनार, कुंभी, अगार, जामुन, दूंगी, कुसुम, ओनला, राही, करींडा, धावो, असना, वांस, साख, हरवल, तेंदू, पापुलर, केन, हल्द, महुआ, नीम, आम, पीपल एवं पलाश के वृक्ष बहुतायत देखने को मिलते हैं। नेपाल सीमा के दक्षिण में 25 किमी तक एक पट्टी विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के लिए जानी जाती है। इस पट्टी में उपरवर्गित सभी प्रकार की वनस्पतियां देखने को मिलती हैं। कोडियाली, गिरवा एवं सरू आदि की तलहटी वनस्पतियों के दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। यहां बहुमूल्य एवं कीमती वनस्पतियां बहराइच के आर्थिक ढांचे को मजबूत करती है। पर हर तरह जनपद के कुछ भागों में बबूल, इमली, बांस के वृक्ष भी यज्ञ-तत्त्र मिलते हैं।

भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का मुख्य पहलू है। जनपद में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 70.64% है। शेष अन्य भूमि बंजर परती, वन, चरागाह एवं छोटे उद्यानों आदि के अन्तर्गत आता है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ स्वरूप है। विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन में लगभग 32% सहायक कृषि क्षेत्र का है। देश की 58% आबादी
का निर्भाच कृषि द्वारा ही सम्भव होता है। यह क्षेत्र नदियों की उपज होने के कारण कृषि प्रधान क्षेत्र के रूप में है।

अध्ययन क्षेत्र में समुन्नत कृषि हेतु जल की कमी को देखते हुए सिंचाई के विभिन्न साधनों का विकास हुतमति से किया गया है। जनपद में नहर, नलकूप एवं तालाब आदि सभी प्रकार के साधनों का प्रयोग होता है। जनपद में टप्पवेल से 93%, नहरों द्वारा 4.59% तथा तालाबों द्वारा 11% क्षेत्र पर सिंचाई होती है। जनपद में सिंचाई का प्रमुख साधन टप्पवेल है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में खरीफ़, रबी एवं जायद आदि तीनों सकल उगाई जाती हैं। यहाँ समस्त कृषि क्षेत्र के 136553 हेक्टेड भाग रबी की किस्में, 131440 हेक्टेड खरीफ तथा 12082 हेक्टेड भाग पर जायद की किस्में उगाई जाती हैं। यहाँ रबी शीत ऋतु की फसल है। यहाँ गेहूं, चावल, दलहन, गन्ना, आलू आदि की खेती प्रमुख हैं।

अध्ययन क्षेत्र की खाद्यान्न किस्में में चावल की फसल का प्रमुख योगदान है जो समपूर्ण कृषि क्षेत्र के 32.40 प्रतिशत क्षेत्र पर बोधी जाती है। जनपद में चावल के उत्पादन में मिहिंपुरवा विकासखण्ड (17749 हेक्टेड) का प्रमुख स्थान है। इसके बाद क्रमशः रसिया (16547 हेक्टेड), शिवपुर (15616 हेक्टेड), महसी (14769 हेक्टेड), नवाबगंज (13806 हेक्टेड), बलहा (12698 हेक्टेड), विशेषकरगंज (12680 हेक्टेड), चितौरा (10581 हेक्टेड) एवं
पायागुर (10136 हेक्टेड) का स्थान है। जनपद के शेष विकासखण्डों में चावल की खेती सामान्य रूप से कम होती है।

सम्पूर्ण जनपद में गेहूं की फसल का उत्पादन 157495 हेक्टेड भूमि पर हो रहा है। इसकी कृषि दक्षिणी पूर्वी एवं उत्तरी पश्चिमी क्षेत्रों में अधिक की जाती है जिसमें सर्वाधिक गेहूं की खेती मिश्रित परवाना (16995 हेक्टेड) में खेती की जाती है। जनपद के अन्य भागों में शिवपुर (16404 हेक्टेड), महसी (15073 हेक्टेड), रैसिया (13566 हेक्टेड), चितौरा (13168 हेक्टेड), पथागुर (12176 हेक्टेड), विशेषकर गंज (12066 हेक्टेड), बलहा (11738 हेक्टेड), ताजवापुर (10845 हेक्टेड), नवाबगंज (10685 हेक्टेड), फरखपुर (8777 हेक्टेड), कैसरगंज (5775 हेक्टेड), जरवल (5475 हेक्टेड) एवं हुजूरपुर (4752 हेक्टेड) आदि विकास क्षेत्रों में गेहूं की खेती वृद्धि प्राप्ति पर की जाती है।

जनपद में अति निम्न फसल गहनता 150 से कम है जो जरवल, कैसरगंज, हुजूरपुर, तथा मिश्रित परवाना विकास खण्ड में देखा जा सकता है। जनपद में निम्न फसल गहनता 150-160 के मध्य है जो बलहा, शिवपुर, ताजवापुर आदि विकास खण्ड में देखा जा सकता है। मध्यम फसल गहनता सूचकांक जनपद में 160-170 के मध्य है जो नवाबगंज, रैसिया, चितौरा, पयागुर, महसी एवं फरखपुर आदि विकास खण्ड दर्शवता है। जनपद में उच्च फसल गहनता सूचकांक 170-180 के मध्य है जो विशेषकर गंज विकास खण्ड में देखा जा सकता है।
परिवहन सामाजिक एवं आर्थिक विकास का मापदंड होता है जो धर्मनिवय एवं शिक्षा की तरह कार्य करता है। ग्रामीण विकास में सड़क परिवहन का सर्वाधिक महत्व है। ये सड़कें राज्य सरकार के अधीन होती हैं जो प्रायः राज्य की राजधानियों को जिला मुख्यालय से जोड़ती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में चार राज्य राजमार्ग हैं जो मुख्यालय को गोंडा होते हुए फ्रीजाबाद, नेपाल, लखनऊ एवं बलरामपुर को जोड़ते हैं तथा देश के अन्य भागों से जोड़ते हैं। जनपद में इनकी कुल लम्बाई 145 किमी है। जनपद में एक प्रमुख रेलमार्ग है जो लखनऊ से गोंडा होते हुए गोरखपुर को जाता है। इस रेलवे मार्ग से यात्री एवं माल यातायात आदि रेलगाड़ियों गुजरती हैं। इस जनपद में 7 रेलवे स्टेशन हैं, जिसमें 1 रेलवे स्टेशन नगरीय है तथा 6 रेलवे स्टेशन ग्रामीण है। जनपद में रेल पटरियों की कुल लम्बाई 54 किमी है।

जनपद की कुल जनसंख्या 2463480 है जिनमें पुरुषों की संख्या 1319998 तथा महिलाओं की संख्या 1143482 है। इस प्रकार प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 866 रही।

अध्ययन क्षेत्र में घरेलू एवं कुटीर उद्योगों का प्रचलन अधिक है जिनमें कोल्डस्टोरेज, चावल मिल, दाल मिल, चीनी मिल आदि प्रमुख हैं। अध्ययन क्षेत्र में खनिज सम्पदा का पूर्णतः अभाव है। सामान्य रूप से खनिज के रूप में यहाँ यत्र-तत्र वायरल्क्स रूप में कंकड़ मिलता है जिसका उपयोग सड़क निर्माण में होता है। दूसरा खनिज रेख है इसका उपयोग
धोबी कपड़ा धोने के लिए करता है। यहाँ की मुलतानी मिटटी वर्तन बनाने के काम आती है।

आर्थिक विकास एवं स्थानीय रूपान्तरण की प्रक्रिया एवं कार्यों के अन्तः सेवा केंद्रों या केंद्र स्थलों को जन्म देती है। ये सेवा केंद्र ग्रामीण विकास में धुरी का कार्य करते हैं। अध्ययन क्षेत्रों में सेवा केंद्रों की हुन्त से बढ़ती हुई संख्या इस तथ्य के साक्षी है कि भौगोलिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ सेवा केंद्रों की उत्पत्ति एवं विकास में सहायक रही हैं।

यथापि प्रागैतिहासिक काल में कोई ऐसी सामाजिक नहीं मिली है जिससे अध्ययन क्षेत्र के बारे में कोई जानकारी हो सके। इस काल में यहाँ के लोग जंगलों में आदिवासियों के रूप में रहकर यातायात की जीवन व्यतीत करते थे। ये लोग खेती, भवन निर्माण एवं कला आदि में अनभिज्ञ होने के कारण अपना स्थायी निवास नहीं बना पाये थे। आगे चलकर आगाघाट के चाक के आविष्कार हो जाने के पश्चात् लोग जंगली जीवन से निकल कर खेती के साथ—साथ स्थायी जीवन के प्रति उद्विग्न होकर घाघरा एवं सरयू आदि नदियों के आस—पास रहना शुरु कर दिये साथ ही लोगों ने अपनी दैनिक आवश्यकताओं की आपूर्ति के साथ प्राकृतिक आवेदनों और हिस्सक पशुओं से बचने के लिए स्थायी जीवन चयन कर बसतियों का निर्माण करने लगे। इस दिशा में परिवर्तन विशेष रूप से आर्थिक रूप से देखने को मिलता है।
मध्यकाल का समय अधिक लड़ाई और विद्रोह का समय रहा। युद्ध के कारण बार-बार यहाँ के रहन-सहन की व्यवस्था नष्ट होती रही जिसका पूरा प्रभाव यहाँ के सेवा केंद्रों पर भी पड़ा।

केन्द्र स्थल जो सेवा केन्द्र का पर्यायवाची है वह ऐसे राज्यीय अधिवास का द्वारक है, जिसमें उसके इर्द-गिर्द के क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की आपूर्ति विभिन्न सेवाओं या प्रकारों के संकेतन्द्र हारा होती है। यद्यपि सेवा केन्द्र शब्द का प्रयोग सर्व प्रथम मार्क जेफरसन महोदय ने 1931 के 0 में किया था, जबकि इसकी सौदागरिक व्याख्या 1933 के 0 में जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान वाल्टर क्रिस्टलर ने अपने केंद्रीय स्थल सिद्धांत द्वारा प्रस्तुत किया। क्रिस्टलर महोदय ने पद्मोषीय मॉडल का प्रयोग केंद्रीय स्थानों के विभिन्न नियमों के लिए K=3, K=4 तथा K=7 आदि मूल्यों को प्रयुक्त किया।

‘विकास धुर’ सिद्धांत के प्रतिपादक पेरॉक्स के अनुसार वृहद आर्थिक इकाईयाँ अनेक नागरिक देशों में जिन्हें के उद्योग प्रतिष्ठानों की संख्या देते हैं। क्रिस्टलर का अनुकरण डिक्सन, लॉश, ब्रस, बेसी एवं गैरिन्स आदि ने किया है। इस दिशा में भारतीय भूगोल विद्वानों में आर0पी0 मिश्र, आर0एल0 सिंह0, एबी0 मुखर्जी0, एच0एन0 मिश्रा जी0के0 मिश्र, एस0के0 दीक्षित, जे0पी0 मिश्र, एस0बी0 सिंह, वी0के0 तिवारी, केन0न0 सिंह एवं आर0सी0 तिवारी आदि का योगदान विशेष उल्लेखनीय है।

ग्रामीण विकास के विविध आयामों में सेवा केंद्रों की भूमिका प्रबल
होती है। सेवा केन्द्र मुख्यरूप से अपने चतुर्दिक विस्तृत क्षेत्र के
उपभोक्ताओं को सेवायें प्रदान करने तथा उत्पादन वितरण को अपनी तरफ
आकृष्ट करने में प्रयत्नशील रहते हैं। यद्यपि सेवा केन्द्रों के विकास में
आवश्यक कंटेंट की प्रबल भूमिका होती है फिर भी वे पदार्थगतीय व्यवस्था में
अंग नहीं बन पाते हैं। ये विषय सेवा केन्द्र के रूप में सप्ताह में कुछ घुने हुए
dिन तथा समय पर सेवा केन्द्र की भूमिका निभाते हैं।

किसी क्षेत्र के सेवा केन्द्र को ग्रामीण वाजार, ग्राम, कस्बा, नगर एवं
महानगर आदि वर्गों में विभाजित करते हैं। विकास एवं नियोजन की दृष्टि
से यह अभियान सेवा कोशिका, सेवा केन्द्र, विकास बिन्दु, विकास केन्द्र,
एवं विकास ध्रुव आदि नामों से जाना जाता है।

सेवा केन्द्रों की केन्द्रीयता मापने के लिए क्रिस्टलर महादेव ने
टेलीफोन सेवाओं, डिक्सन्स ने शोक व्यापार को, सेवाओं ने नगर के कुछ
क्षेत्र में संस्थाओं को एवं ग्रीन ने इंग्लैंड तथा वेल्स ने बस सेवाओं का
आधार माना है। इस दिशा में कांप, लॉल, ब्रस, ब्रेशी, गॉल्डस्लैड, गैरिसन,
आर०पी० मिश्र, एच०एन० मिश्र, जे०पी० मिश्र औरपी० सिंह का नाम विशेष
उल्लेखनीय है जिन्होंने अलग-अलग क्षेत्रों को लेकर सेवा केन्द्रों के स्तर
मापने का कार्य किया है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की चयन परिषद में शिक्षा,
स्वास्थ्य, डाक एवं संचार, वाजार तथा प्रशासनिक सेवाओं को प्रमुखता के
साथ रखा गया है। शिक्षा जीवन के समग्र विकास का मापदंड तैयार
करती है। जनपद में अन्य कारकों की तरह सेवा केंद्रों के विकास में शिक्षा का विशेष महत्व है। शैक्षिक सेवाओं में जनपद में प्राथमिक विद्यालय से लेकर डीडी कॉलेज तक की सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहाँ 383 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 83 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, 15 डीडी कॉलेज स्थित हैं जो निरन्तर अपनी सेवाओं के माध्यम से लोगों को साक्षर बनाकर जागरूक करने का कार्य करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में डिस्पेंसरियों से लेकर परिवार नियोजन तक की अनेक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हैं। अधिकतर ये सेवाएं सरकार द्वारा संचालित हैं। जनपद में कुल 60 डिस्पेंसरी की सुविधा उपलब्ध हैं। यहाँ कुल 57 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैं जो बहराइच, पयागपुर, कौसरगंज एवं रिसिया में सर्वाधिक हैं। यहाँ पर आयुर्वेदिक 30, होम्योपैथिक 17, एवं एलोपैथिक 16 अस्पताल स्थापित हैं जो निरंतर अपनी सेवाएं ग्रामीणों को देते रहते हैं। जनपद में कुल 5 यूनानी चिकित्सालय स्थापित है।

अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक मातृ एवं शिशु कल्याण केंद्र बहराइच, कौसरगंज एवं पयागपुर में स्थित हैं। जिनमें सबसे अधिक जनपद मुख्यालय पर मातृ एवं शिशु कल्याण केंद्र हैं। जनपद में कुल 35 पशुचिकित्सालय स्थापित हैं। जहाँ पर 'डी' श्रेणी की सुविधाएं उपलब्ध हैं। जनपद में 271 गांवों में डाक सेवाएं उपलब्ध हैं। यहाँ सचार सेवाओं की वृद्धि तेजी के साथ की जा रही है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में कुल 125 बाजार केंद्र हैं। जनपद के
बहराइच, पयागपुर, रिसिया, नवाबगंज, कैंसरगंज, महसी तजवापुर एवं हुजूरपुर में बड़े बाजार केन्द्र देखने को मिलते हैं। प्रायः यह बाजार केन्द्र सड़कों के किनारे पर स्थित हैं। ये सभी बाजार केन्द्र आवर्ती केन्द्र के रूप में हैं जो स्थानीय उत्पादन को बड़े केन्द्रों तक पहुँचाने का काम करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के केन्द्रीयता सूचकांक के आधार पर सेवा केन्द्रों को 3 प्रमुख कोटियों में रखा गया है। जनपद में बहराइच एक नगरीय सेवा केन्द्र है जहाँ पर सभी प्रकार की सुविधाएं मिलती हैं जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, डाकघर, डाकघर एवं तारघर एवं अन्य सभी प्रशासनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। प्रथम कोटि के ग्रामीण सेवा केन्द्रों में रिसिया, पयागपुर एवं कैंसरगंज हैं जो अपनी सेवाओं के माध्यम से पृथ्वी प्रदेश की समुदायों में विशेष भूमिका का निर्माण करते हैं।

द्वितीय कोटि के सेवा केन्द्रों में नवाबगंज, मोतीपुर, शिवपुर, नूरपुर, हुजूरपुर, महसी एवं तजवापुर है। इन सेवा केन्द्रों की भी क्षेत्र के विकास में प्रबल भूमिका है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में तृतीय कोटि के 26 ग्रामीण सेवा केन्द्र हैं जो जनपद के सम्पूर्ण भू-भाग पर प्रसारित हैं। इनमें समस्त पुरुष धोंबिया हैर, मिहिलपुरवा, बलहा, लोहरा, सुजौली, सेमरी घाटही, उर्जा, चन्दनपुर, सिसई, सलोन, मसीहाबाद, चिलवरिया, धरसवा, गिलोला, खजुरो, गंगवल, कन्हौर, करमुल्लापुर, बदरौली, डिहवा शेरबहादुरसिंह, गंडरा, बम्बौरा, चन्दपपड़, गोरिया, रमपुरवा, नन्दवल, एवं वसन्तपुर आदि प्रमुख हैं जो अपनी सेवाएं
जनपद के ग्रामीणों को मुहैया करते हैं। तृतीय रंग के ये सभी केंद्र रेखीय प्रतिरूप में देखने को मिलते हैं। इन सेवा केंद्रों पर घरेलू एवं कृषि उद्योगों का प्रचालन अधिक है। इन सभी केंद्रों का जनपद के विकास में प्रबल भूमिका है क्योंकि इनका सम्बन्ध सीधे ग्रामीणों से है।

संयुक्त विकास की कड़ी में आधुनिक तरीके से योजनाओं की शुरुआत वर्तमान शादी की देन है। जनपद में योजनाविभाग रूप में सेवाकेंद्रों के नियोजन का प्रारम्भ पंचवर्षीय योजना के साथ शुरू हुआ। उस समय देश विभाजन के कारण भूखमरी, खाद्यान्नों की कमी और आपात की गम्भीर समस्या से गुजर रहा था अत: प्रथम योजना के दौरान कृषि सिंचाई एवं ऊर्जा विकास पर तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना में उद्योग एवं कृषि पर विशेष जोर दिया गया। इस समय इन योजनाओं ने अपने अनेक चरण पूरे कर लिए हैं।

अध्ययन क्षेत्र में सामान्य विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवा केंद्रों के उच्चीकरण हेतु प्रमुख रूप से कृषि, पशुपति, वागवानी, सिंचाई, परिवहन, लघु उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संचार सेवाओं को अत्यधिक महत्ता दी गयी है। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवा केंद्रों के स्तर को ऊँचा उठाने की दृष्टि से फसल ऋण योजना, रोजगार योजना, लघु परिवहन योजना, लघु उद्योग योजना, स्वर्णजयन्ती शहरी सेवागर्भ योजना, सधन मिनी डेयरी परियोजना, गंगा कल्याण योजना आदि का क्रियान्वयन तेजी के साथ हो रहा जिससे ग्रामीण विकास को गति दी सकें।
समन्वित ग्रामीण विकास में सेवा केंद्रों की सेवाएं तथा कृषकों की उत्पादित वस्तुएं बड़े केंद्र तक पहुँचें इसके लिए स्थानीय स्तर पर विषयन केंद्र की व्यवस्था किया जाना आवश्यक है। जनपद के छोटे एवं बड़े केंद्रों को देश के बड़े सेवा केंद्रों से जोड़ा जाय। आवश्यक केंद्रों को महत्व दिया जाय। जनपद के छोटे-बड़े सेवा केंद्रों का पदानुक्रम निर्धारित कर आवश्यकता के अनुरूप उन्हें सुविधाएं प्रदान की जाय।

ग्रामीण विकास में सहायक सेवा केंद्रों की नियोजन हेतु ऊपर वर्णित किन्द्रों पर ध्यान देकर जनपद में समन्वित विकास सम्भव है। ऐसा करने से न केवल सेवा केंद्रों का स्तर ऊँचा होगा साथ ही आर्थिक समृद्धता के माध्यम से जनपद के नागरिकों के स्तर में वृद्धि होगी।